मछली मछली होती है

लिओ लिओनी

"मेढक मेढक होते हैं और मछली मछली, और जो जो है वह वही है!" इस कहानी में टैडू मेढक कहता है. आप मेढकों और मछलियों के बारे में क्या जानते हैं?

क्या आप जानते हैं कि मेढक...

... अंटार्कटिका के अलावा हर महाद्वीप में पाए जाते हैं?

... उभयचर हैं, यानी उनके जीवन का कुछ हिस्सा पानी और कुछ जमीन पर बीतता है?

... के गलफड़े हाते हैं, जब वे छोटे होते हैं और बड़ा मेढक बनने पर उनके फेफड़े निकल आते हैं?

... एक बारे में कई हजार अंडे देते हैं?

... (इंसानों के विपरीत) वे ठंडे खून वाले हैं और उनके शरीर का तापमान उनके आसपास के पानी या हवा के बराबर हो जाता है?

... धरती पर सबसे पहले 18 करोड़ वर्ष पहले अस्तित्व में आए?

क्या आप जानतें हैं कि मिन्नू (minnow) मछलियां...

... साफ पानी में पाई जाने वाली मछलियों का सबसे बड़ा परिवार है?

... अमूमन छः इंच से भी कम लंबाई की होती हैं लेकिन इनमें से कुछ नौ फीट तक बढ़ जाती हैं?

... की पलकें नहीं होतीं, इसलिए सोते वक्त वे अपनी आंखें बंद नहीं कर सकतीं?

... अपने गलफड़ों में पानी भरकर इसमें मौजूद ऑक्सीजन से सांस लेती हैं?

... उन मछलियों की वंशज हैं जो 24 करोड़ वर्ष पूर्व अस्तित्व में आई थीं?
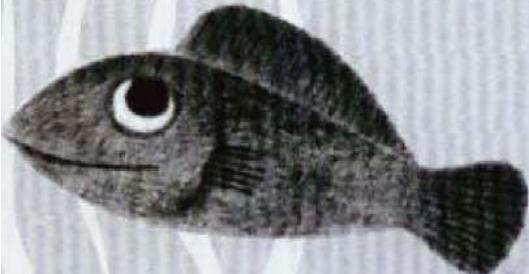
अगर आप मेढकों और मछलियों के बारे में कुछ और मजेदार बातें जानना चाहते हैं तो किसी लाइब्रेरियन या पुस्तक विक्रेता से इन दिलचस्प जीवों पर लिखी गईं अन्य किताबों के बारे में पूछें.

लिओ लिओनी
मछली
मछली
होती
है

एक था जंगल और उस जंगल के छोर पर था एक छोटा सा तालाब. तालाब में रहते थे दो नन्हे दोस्त- मिन्नू मछली और टैडू मेढक. तालाब में उगे झाड़ के बीच दोनों हमेशा लुका-छिपी खेलते रहते थे.
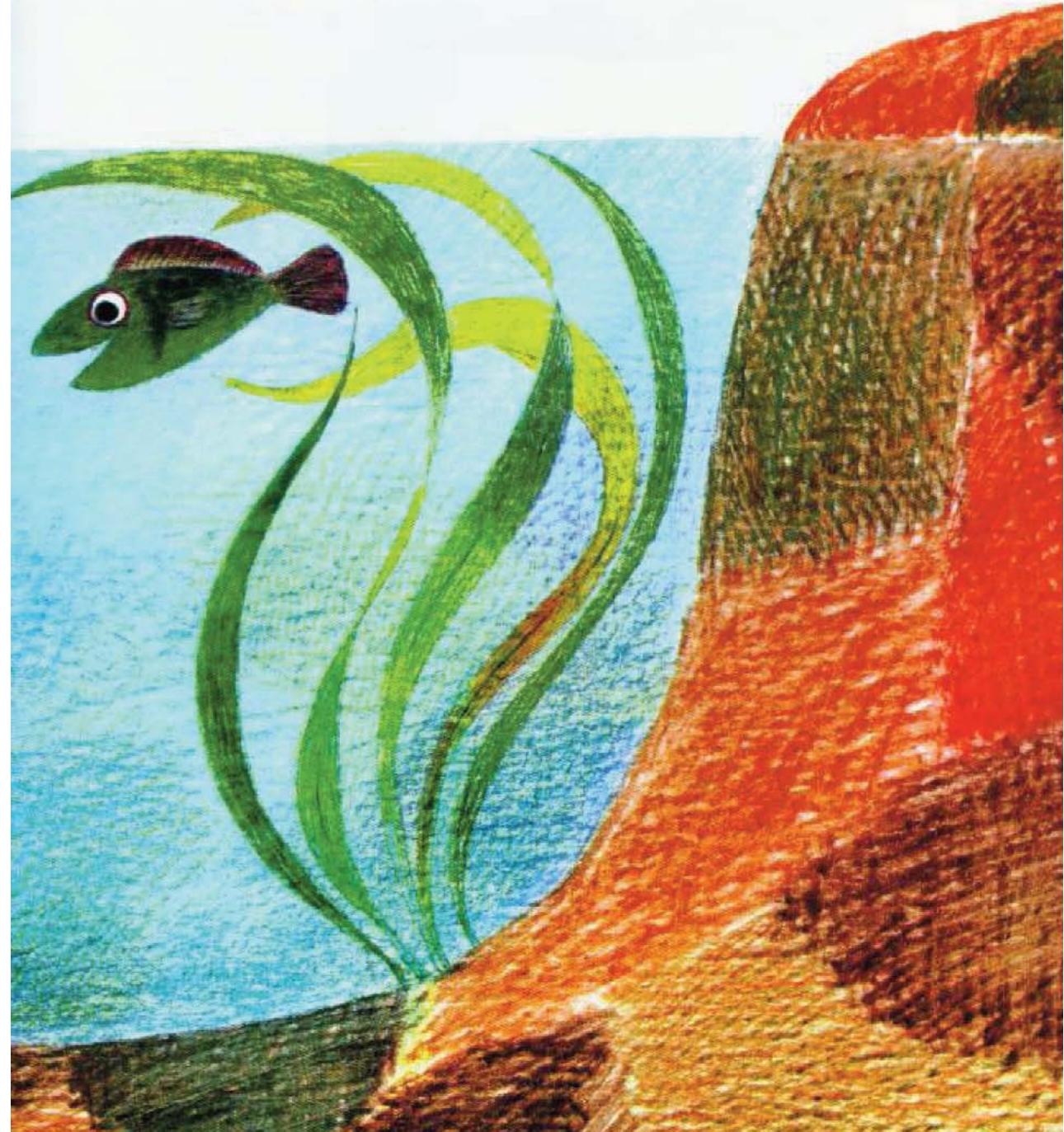
एक दिन सुबह-सुबह टैडू ने देखा कि रातभर में उसके आगे की ओर से दो छोटे-छोटे पांव उग आए हैं.

"देखो", बड़े घमंड से वह मिन्नू को बोला, "देखो, मैं मेढक हूं!"

"बेवकूफ" मिन्नू बोली. "तुम मेढक कैसे हो सकते हो? कल रात ही तो तुम मेरी तरह छोटी सी मछली थे."
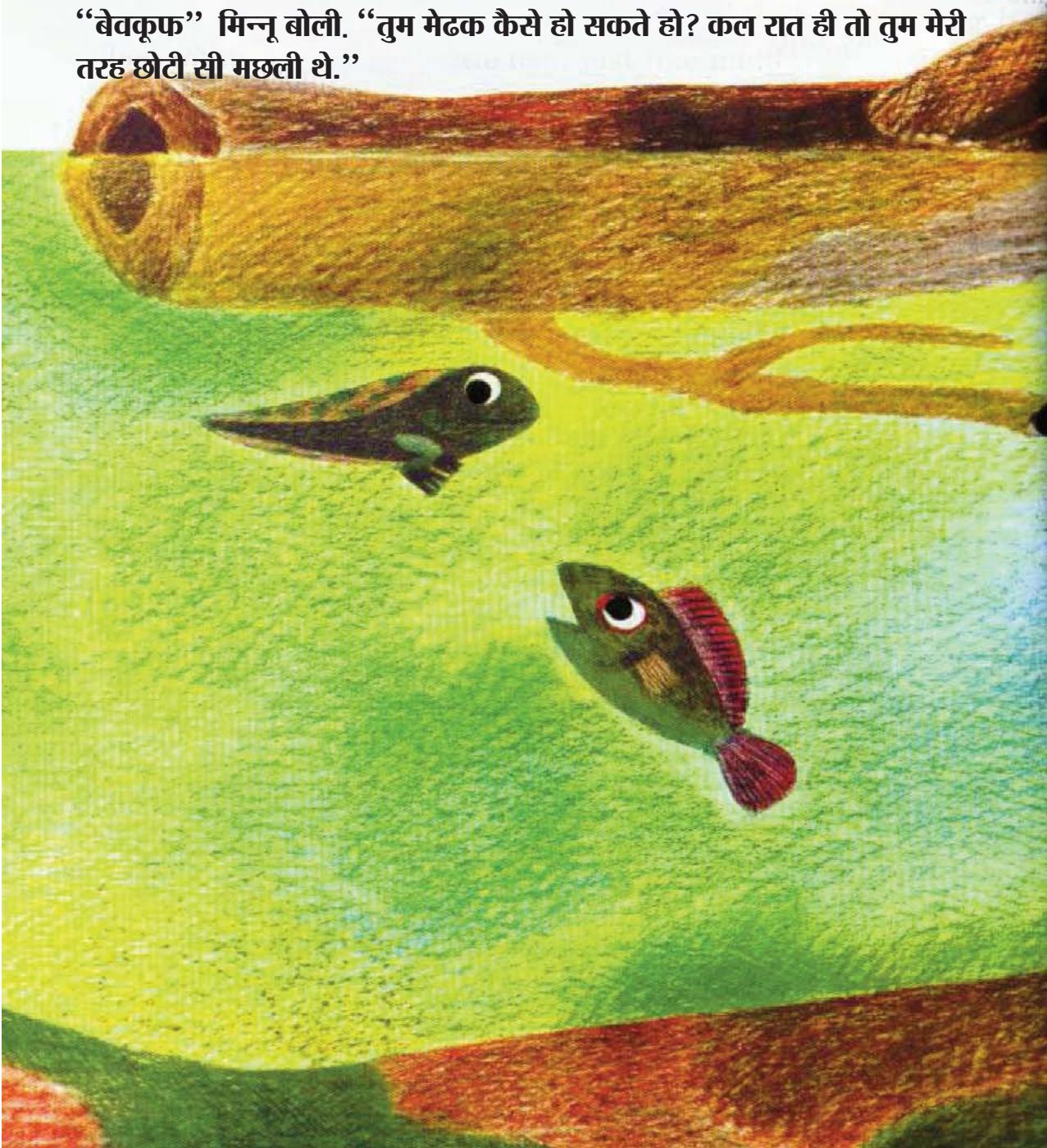
अब इस बात पर दोनों में खूब बहस हुई. अंत में टैडू बोला, ''मेढक मेढक होते हैं और मछली मछली, और जो जो है वह वही है!''
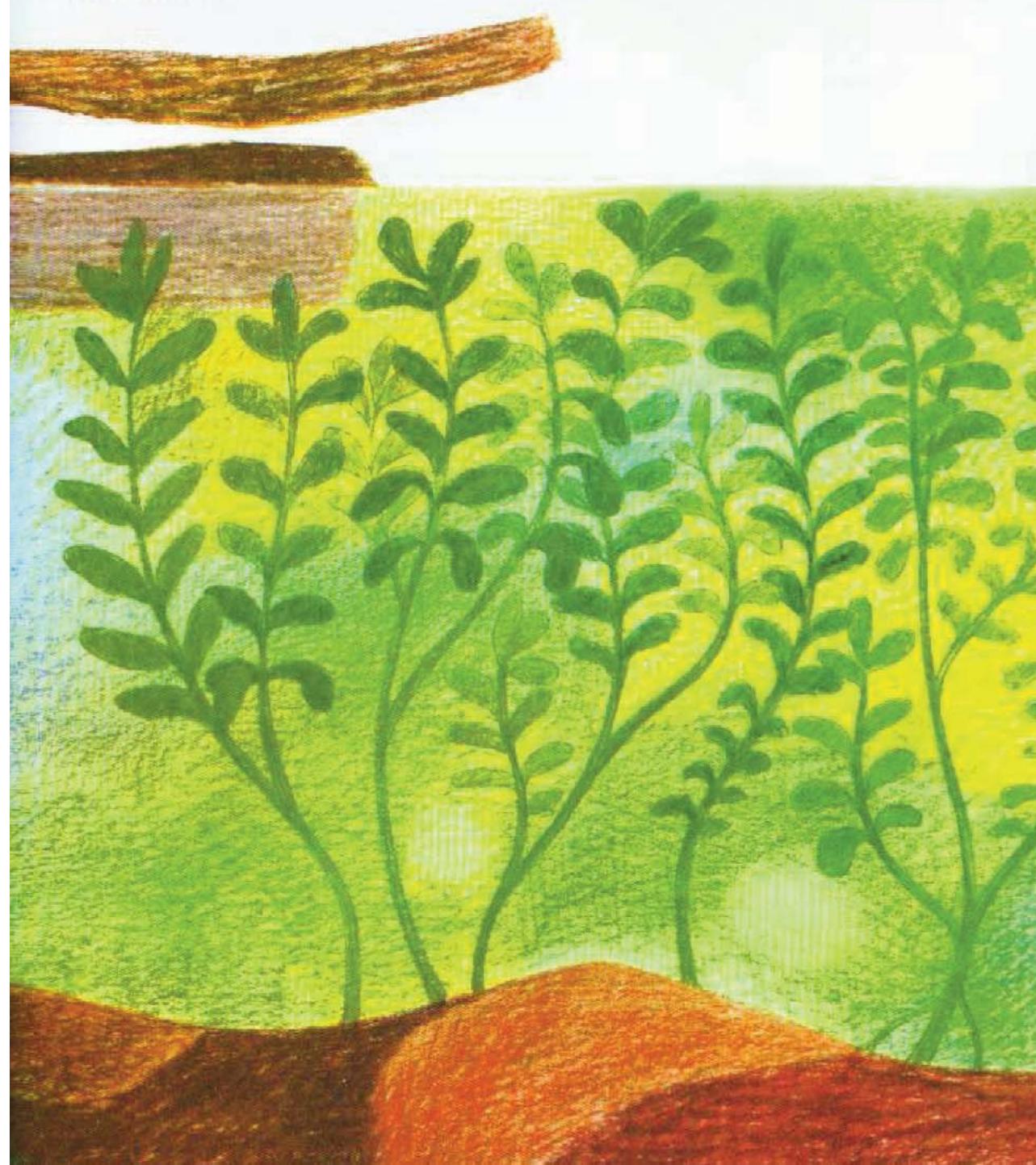
अगले कुछ हफ्तों में टैडू के आगे की ओर भी छोटे-छोटे पैर उग गए और उसकी पूंछ सिकुड़ती चली गयी.
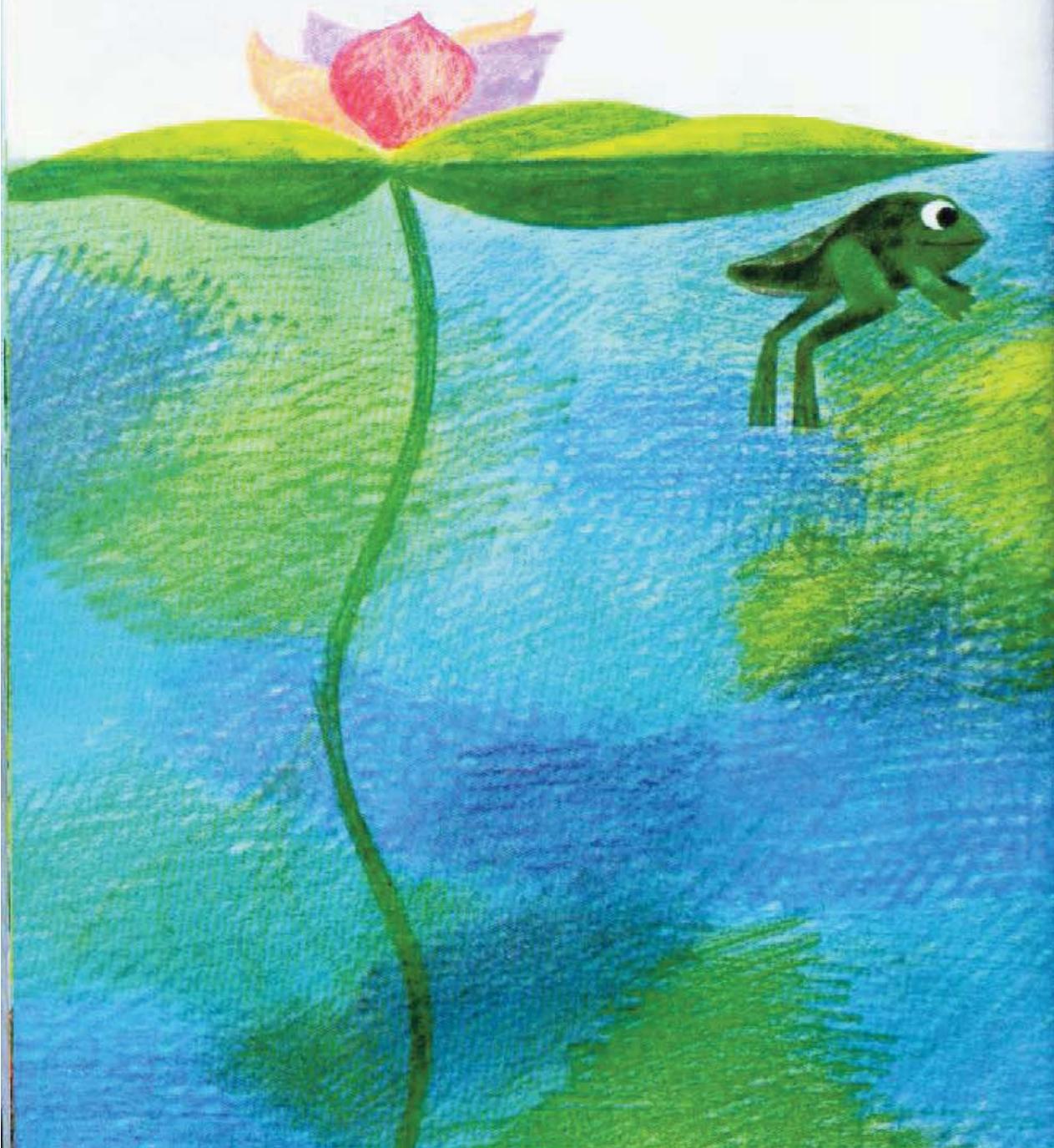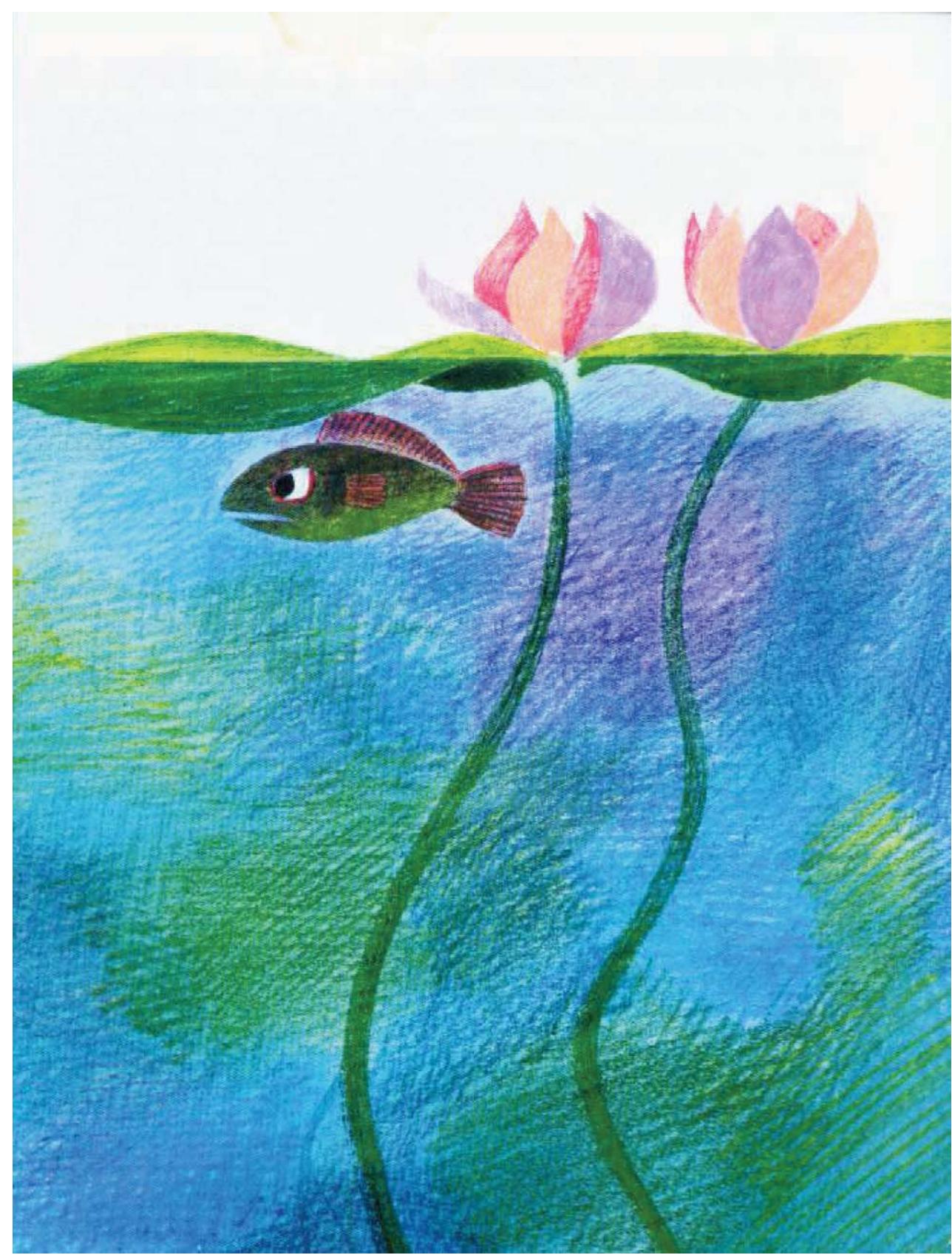
और एक दिन ऐसा आया कि टैडू सचमुच एक मेढक में बदल गया. उसने पानी से बाहर छलांग लगाई और तालाब के किनारे उगी ऊंची-ऊंची घास के बीच गायब हो गया.
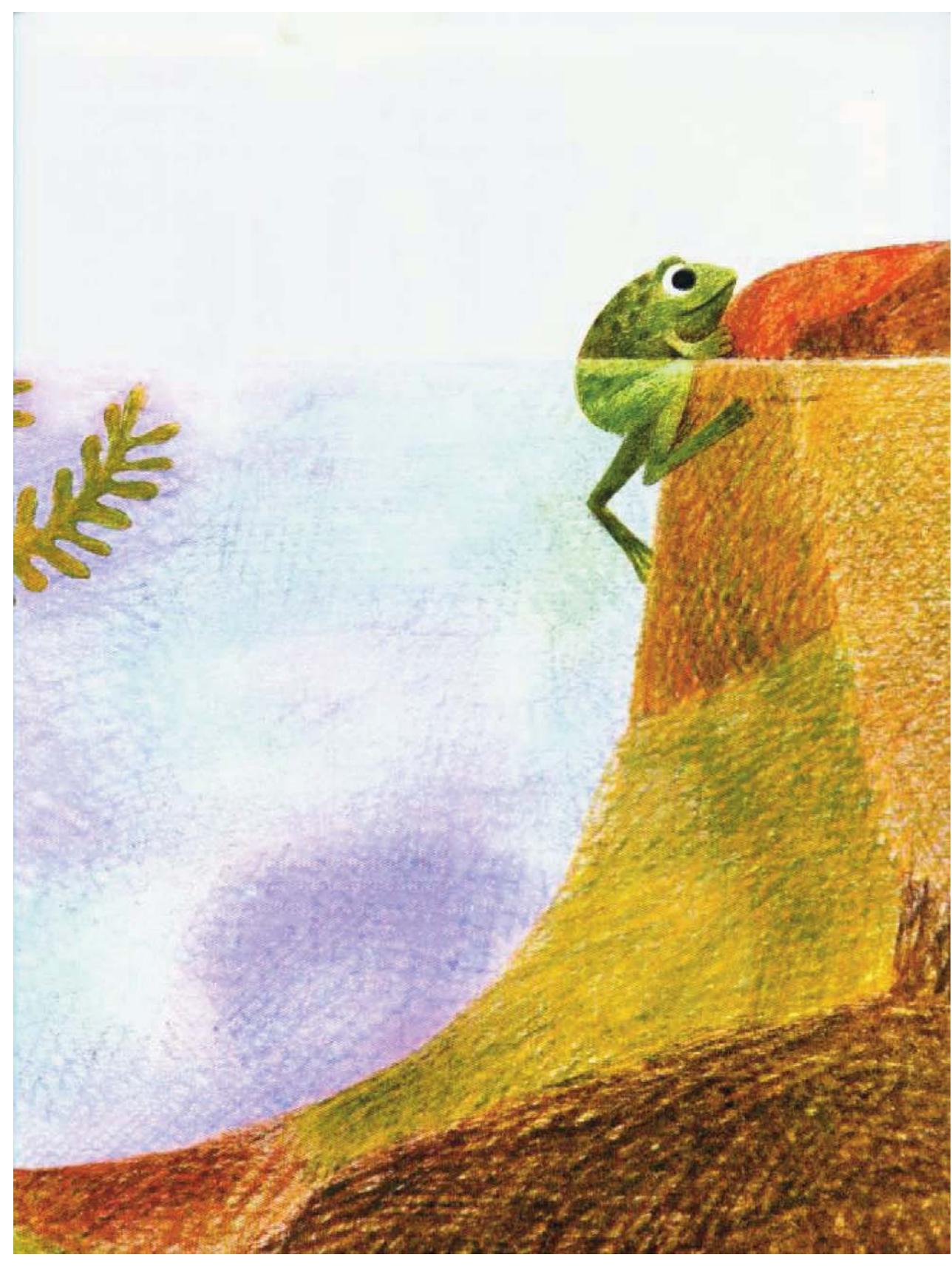
मिन्नू भी बढ़ती गई और अब वह मोटी-ताजी मछली बन गई थी.अकसर वह हैरत से सोचती कि चार पांव वाला उसका दोस्त आखिर कहां गया होगा. इस तरह कई दिन और हफ्ते गुजर गए लेकिन मेढक लौटकर नहीं आया.
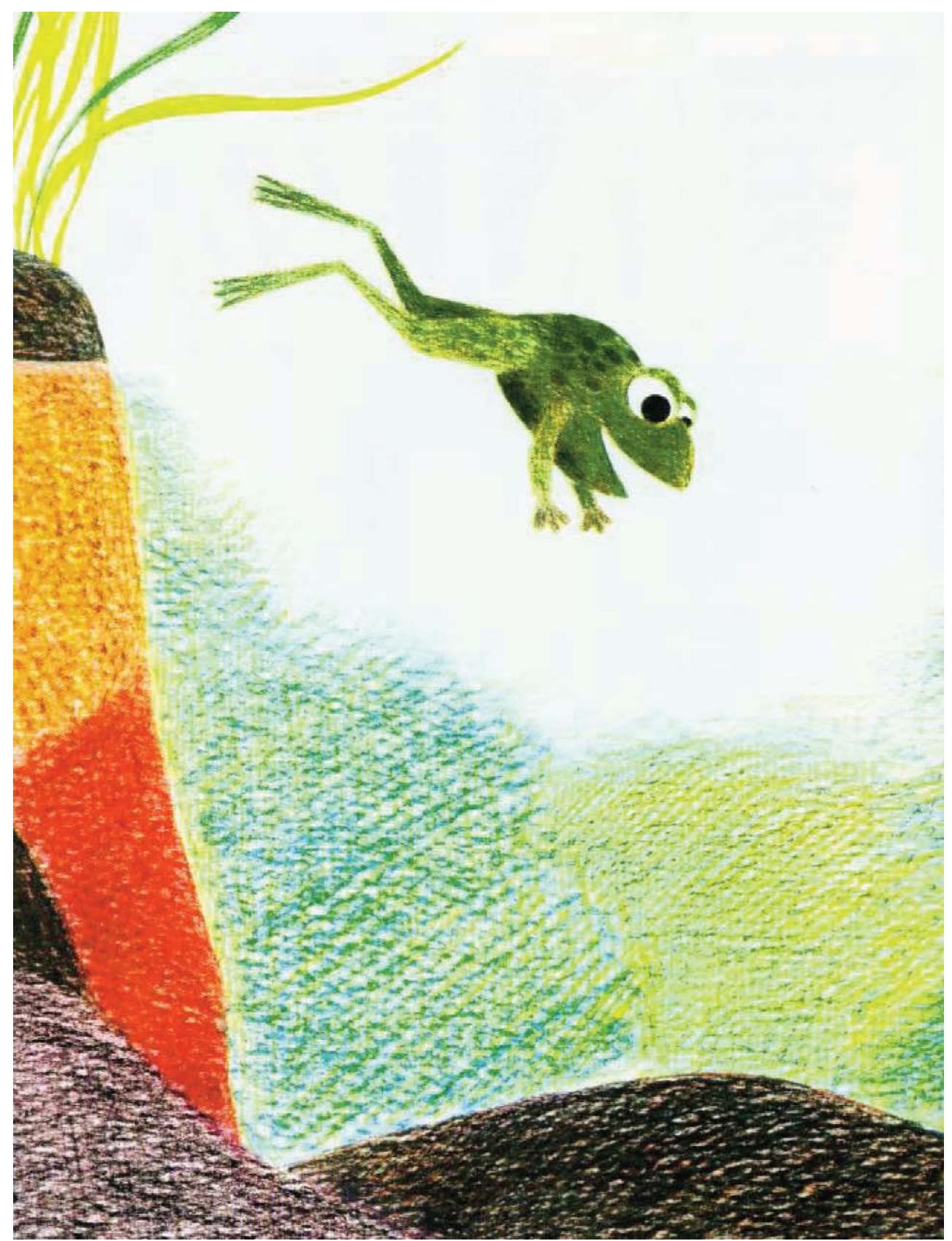
एक दिन तालाब में एक जोरदार छपाका हुआ और अंजुली भर पानी किनारे घास पर छलक गया. मिन्नू ने देखा कि मेढक तालाब में लौट आया है.

"अरे इतने दिन तुम कहां थे?" उसने मेढक से सवाल किया.

मेढक बोला, "मैं बाहर की दुनिया में फुदक रहा था, यहां से वहां. और मैंने एक से बढ़कर एक चीजें वहां देखीं."

“भला किस तरह की चीजें?” मछली ने पूछा.

“चिड़िया”, मेढक ने रहस्य भरे अंदाज में कहा. “चिड़िया!” और उसके बाद उसने मछली को चिड़ियों के बारे में बताना शुरू किया. “उनके पंख होते हैं, दो पांव होते हैं और उनके रंगों के तो कहने ही क्या!”
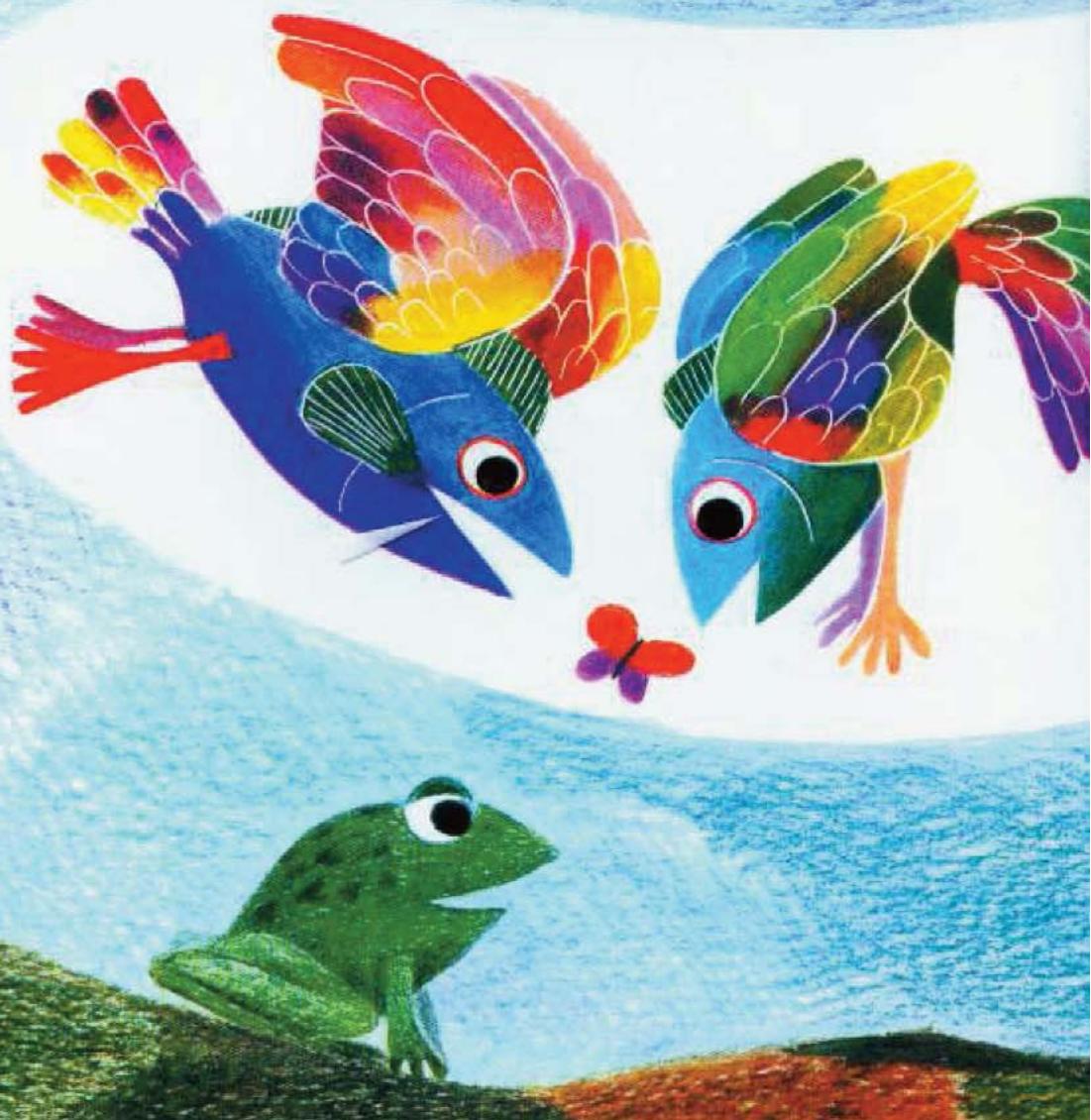
जैसे-जैसे मेढक बताता जाता था, उसकी दोस्त ने देखा कि उसके दिमाग में एक पंखों वाली मछली उड़ रही है.

“और वहां तुमने क्या-क्या देखा?” मछली ने बेचैन होकर पूछा.
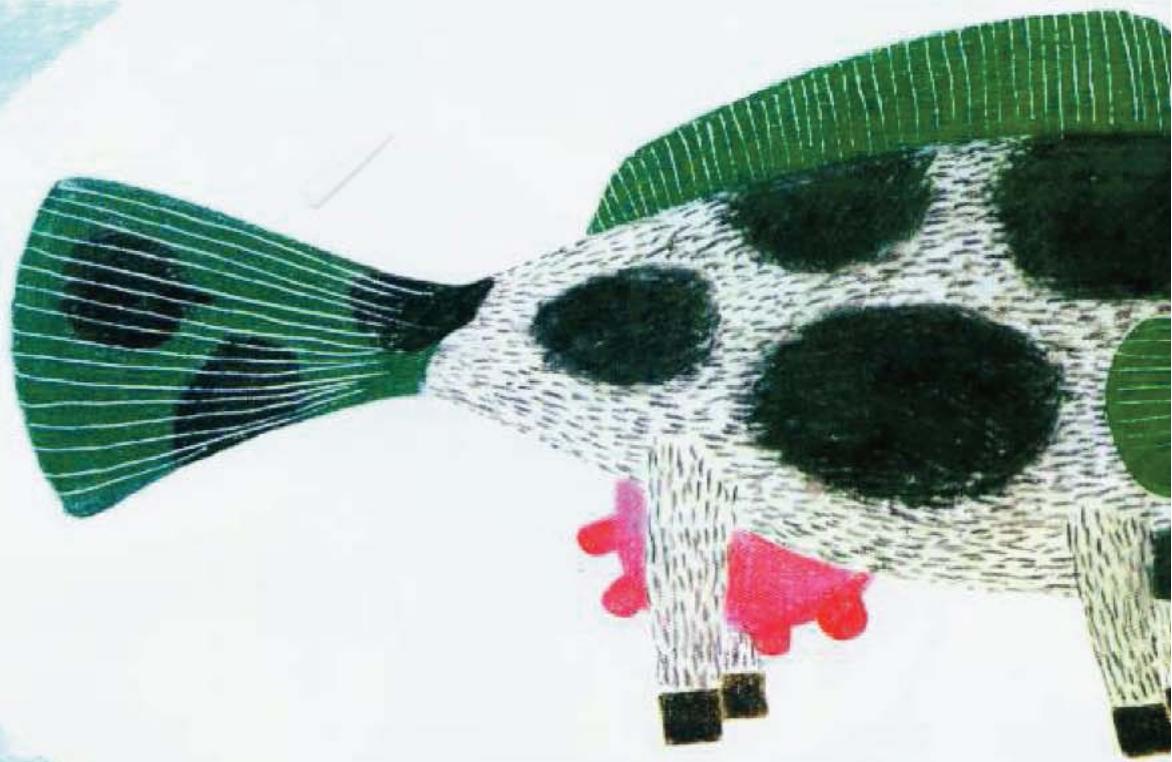
"और मैंने वहां गायें देखीं." मेढक बोला, "गायें! उनके चार पैर और दो सींग होते हैं, वे घास खाती हैं और गुलाबी रंग की दूध की थैली लिए घूमती रहती हैं."

"और हाँ, वहां लोग भी थे!" मेढक ने बताया. "आदमी, औरतें और बच्चे!" और मेढक तब तक बताता गया, बताता गया, जब तक कि तालाब में अंधेरा नहीं छा गया.

लेकिन मछली का दिमाग रंगों, रोशनियों और अजीबोगरीब चीजों से भर गया था. वह सो भी नहीं पा रही थी. काश वह भी अपने दोस्त की तरह बाहर कूद सकती और हैरत से भरी उस दुनिया को देख पाती.
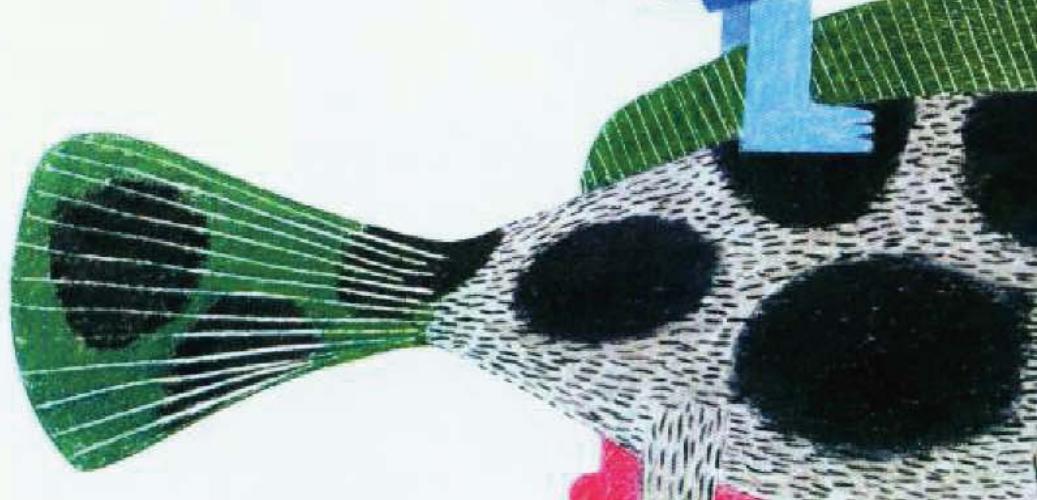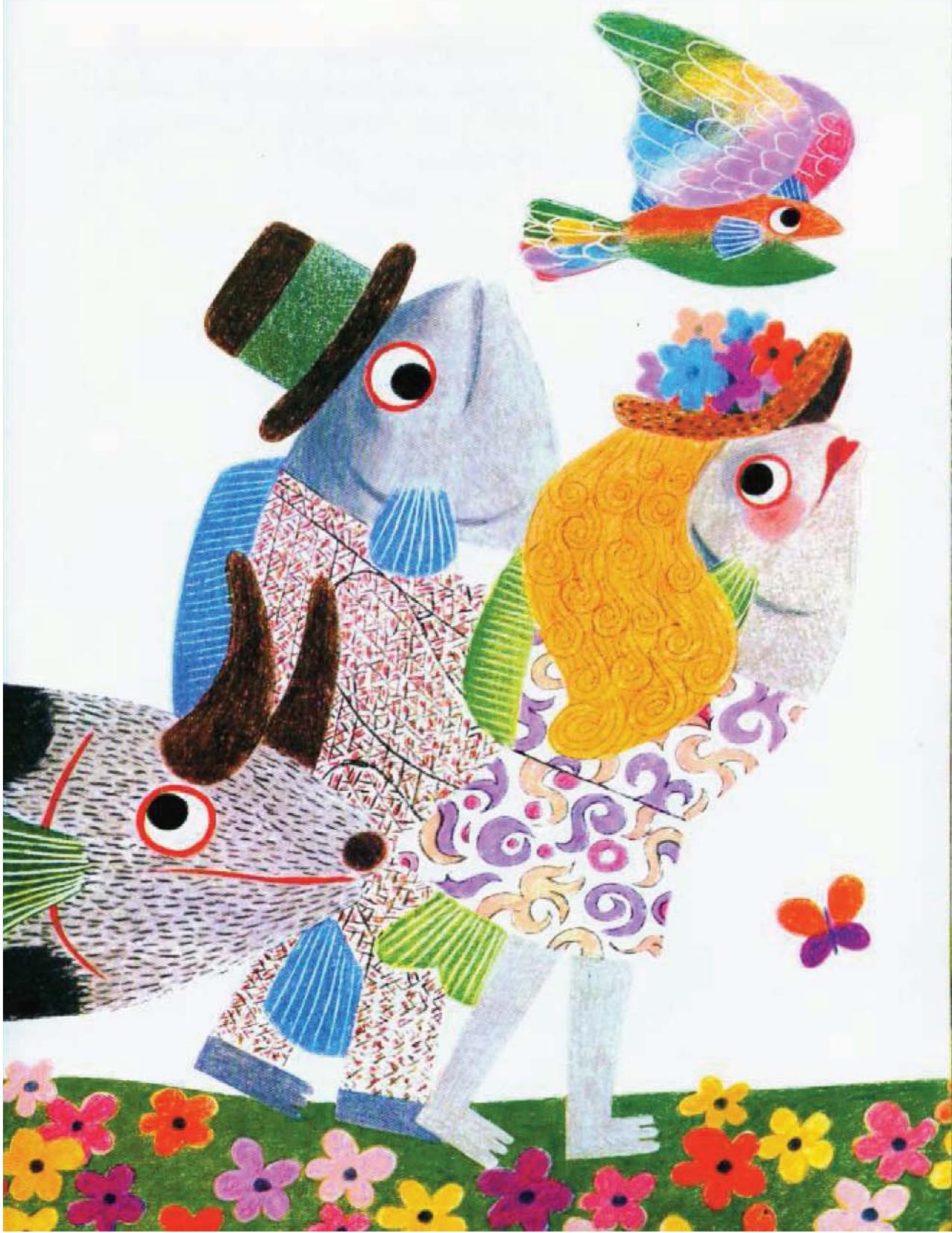
और इस तरह दिन बीतते गए. मेढक चला गया था और मछली उड़ान भरती चिड़ियों, चुगती गायों और उन विचित्र जीवों के बारे में सोचती रहती जिन्हें उसका दोस्त 'लोग' कहता था.

आखिर एक दिन उसने फैसला लिया कि वह भी बाहर जाकर उन सारी चीजों को देखेगी. और उसने अपनी पूंछ से पानी पर जोर से छपाका मारा और उछलकर तालाब के किनारे जा गिरी.
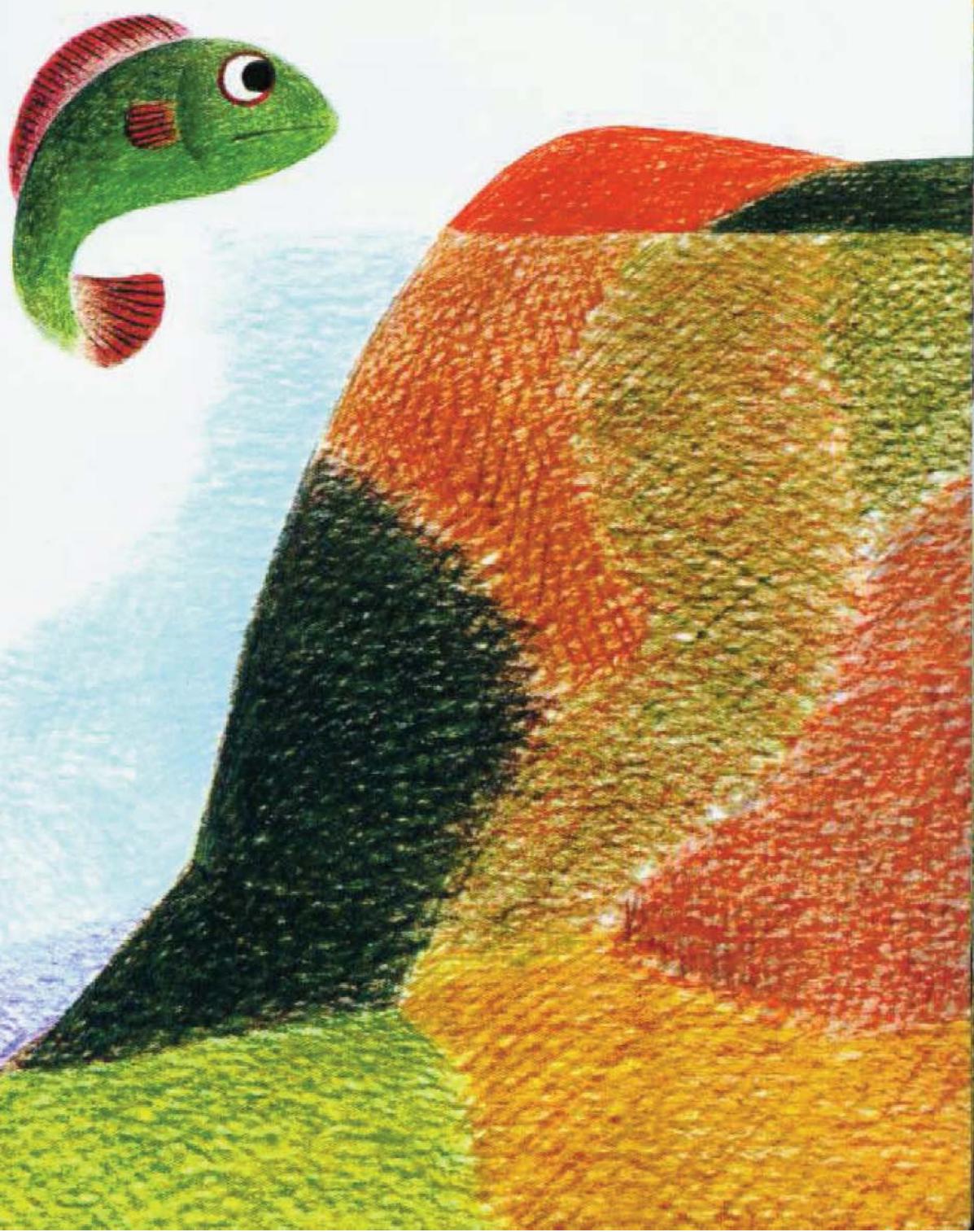
वह सूखी, गर्म घास पर गिरी थी और उसे हवा की जबर्दस्त प्यास लग रही थी. वह न सांस ले पा थी और न ही हिल-डुल पा रही थी. ''बचाओ!'' मछली पूरी ताकत से चिल्लाई.
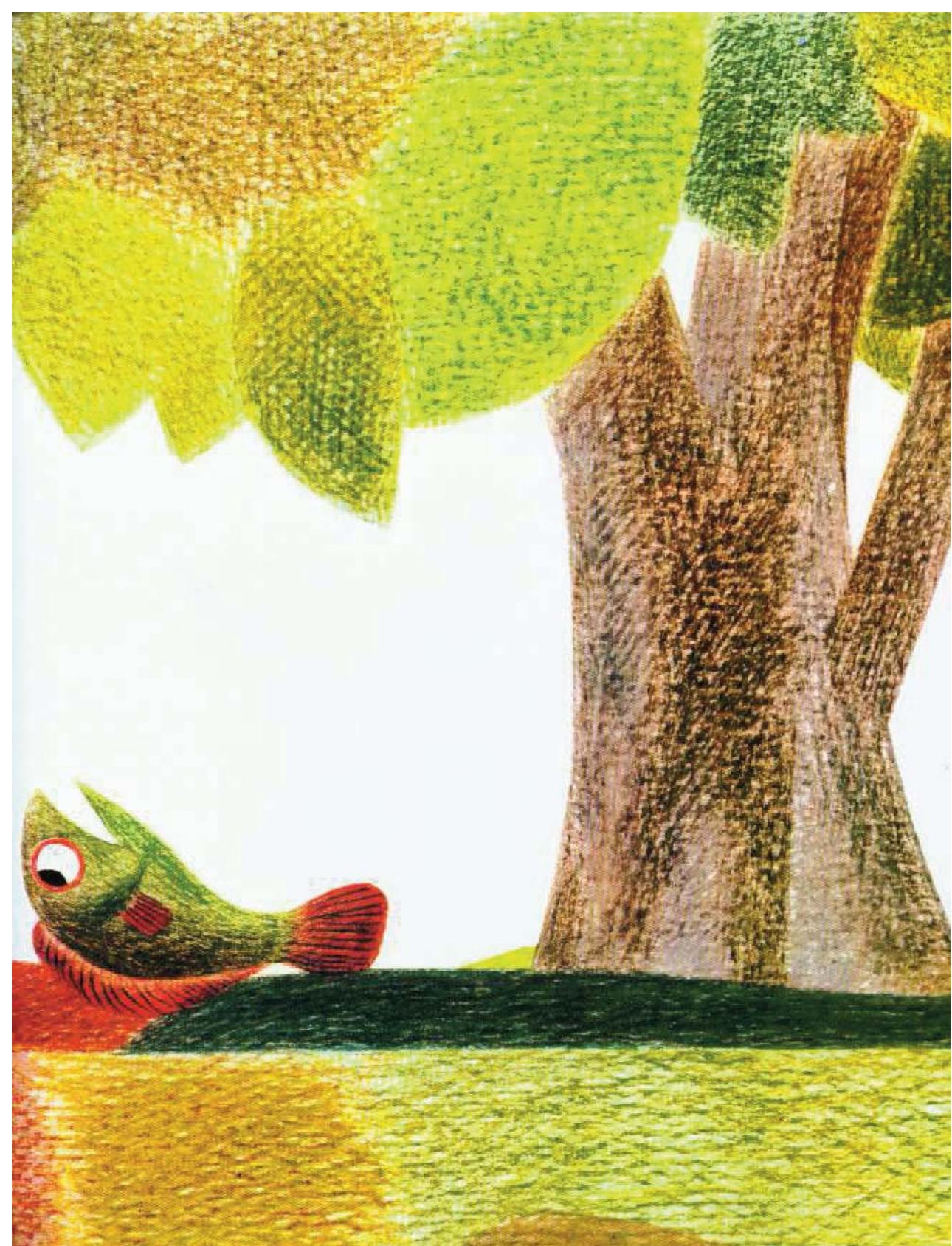
मछली की किस्मत अच्छी थी. उसका दोस्त पास ही तितलियों के शिकार में मशगूल था.मेढक ने मछली को तड़पते हुए देखा तो दौड़ा चला आया. उसने पूरी ताकत लगाई और मछली को वापस तालाब में धकेल दिया.
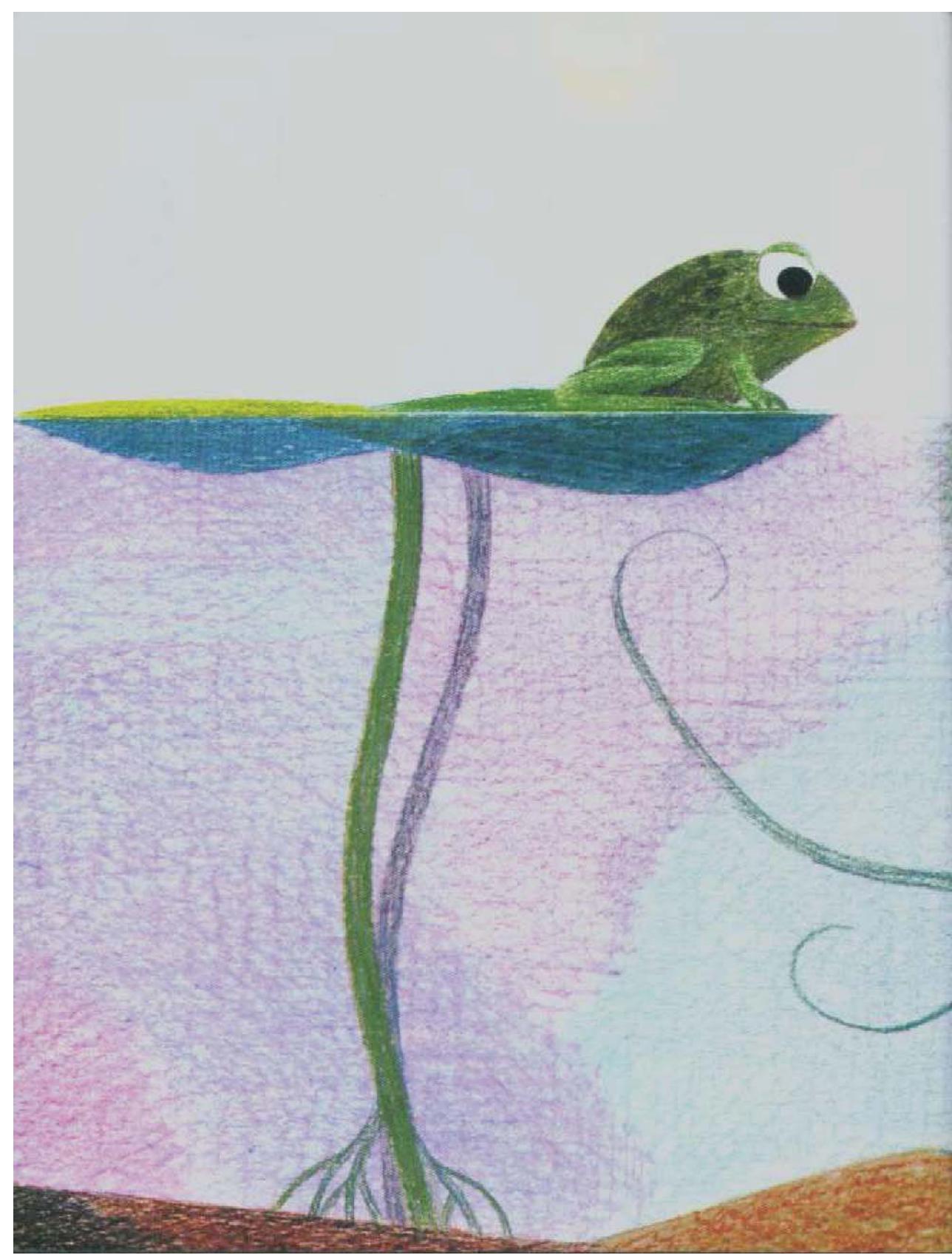
मछली बुरी तरह घबरा गई थी. पल भर को वह बिना हिले-डुले पानी में पड़ी रही. फिर उसने गहरी सांस खींची. ठंडे साफ पानी की फुहार उसके गलफड़ों से बहने लगी. उसे अपना शरीर फिर से हल्का लग रहा था. अब वह पहले की तरह पूंछ के हल्के थपेड़ से पानी में आगे-पीछे, ऊपर-नीचे कहीं भी जा सकती थी.

पानी के भीतर उगा झाड़ सूरज की किरणों को रंगीन पट्टियों में बदल रहा था. यह दुनिया दूसरी किसी भी दुनिया से ज्यादा खूबसूरत है. वह अपने दोस्त मेढक की ओर देखकर मुस्कराई जो पास ही में एक छोटी सी पत्ती पर बैठा उसे देख रहा था.

"तुम सही कहते थे." उसने कहा, "मछली मछली ही होती है."